* S B - 0 1 1 1 / 4 6 0 0 *

SB-0111

Second Year B. A. Examination

March / April – 2011

Hindi : Paper - I

छायावादोत्तर हिन्दी काव्य

Time : Hours] [Total Marks : **70**

सूचना :

(१)

નીચે દર્શાવેલ ☛ નિશાનીવાળી વિગતો ઉત્તરવહી પર અવશ્ય લખવી.
Fillup strictly the details of ☛ signs on your answer book.

Name of the Examination :

☛ **S. Y. B. A.**

Name of the Subject :

☛ **Hindi - Paper - 1**

☛ Subject Code No. : **0 1 1 1** ☛ Section No. (1, 2,.....) : **Nil**

Seat No. :

Student's Signature

(२) सभी प्रश्नो के अंक समान है।

१ भावपक्ष और कलापक्ष की दृष्टि से 'जयद्रथ–वध' की समीक्षा कीजिए। १४

अथवा

१ 'जयद्रथ–वध' के आधार पर अर्जुन की चारित्रिक विशेषताओं पर प्रकाश डालिए। १४

२ ''हिमालय' कविता में राष्ट्रीय चेतना की प्रबल अभिव्यक्ति मिलती है।'' – इस कथन की समीक्षा कीजिए। १४

अथवा

२ ''घर में वापसी' कविता में वर्तमान समाज की वास्तविकता की ओर संकेत किया गया है।'' – इस कथन की समीक्षा कीजिए। १४

३ 'जयद्रथ–वध' के आधार पर उत्तरा की चारित्रिक विशेषताओं की चर्चा कीजिए। १४

अथवा

३ ''बुद्ध और नाचघर' कविता व्यंग्य प्रधान है'' – स्पष्ट कीजिए। १४

४ टिप्पणीयाँ लिखिए : १४

(अ) 'जयद्रथ–वध' काव्य के शीर्षक की सार्थकता।

अथवा

(अ) 'जयद्रथ–वध' में स्वर्ग का वर्णन।

(ब) 'मधुशाला' कविता का उदेश्य।

अथवा

(ब) 'गीत फरोश' कविता में निहित व्यंग्य।

५ ससंदर्भ व्याख्या किजिए : १४

(क) ''मैं हूँ वही जिसका हुआ था ग्रन्थि–बन्धन साथ में,
मैं हूँ वही जिसका लिया था हाथ अपने हाथ में,
मैं हूँ वही जिसको किया था विधि–विहित अर्ध्दांगिनी,
भूलो न मुझको नाथ, हूँ मैं अनुचरी चिरसंगिनी॥''

अथवा

(क) ''जो सर्वदा ही शून्य लगती आज हम सबको धरा,
जो नाथ–हीन अनाथ जग में हो गई है उत्तरा,
हूँ हेतु इसका मुख्य मैं ही हा! मुझे धिक्कार है,
मत धर्मराज कहो मुझे, यह क्रूर–जन भू–भार है॥''

(ख) ''मत बांधो भय के मारे
लोगों को लोहे की कड़ियों में
केवल इसलिए कि उन्हें
शांति और प्रेम और उसका प्रतीक
कविता
अच्छी लगती है
लिखने में पढ़ने में सुनाने में।''

अथवा

(ख) ''कैसी विड़म्बना है
कैसा झूठ है
दरअस्ल, अपने यहाँ जनतन्त्र
एक ऐसा तमाशा है
जिसकी जान
मदारी की भाषा है।''

(ग) ''थे वीर लाखों पर किसी से गति न उसकी रुक सकी,
सब शत्रुओं की शक्ति उसके सामने सहसा थकी॥''

अथवा

(ग) ''धन के विलास का बोझ दुखी–दुर्बल दरिद्र जब ढोता है,
दुनिया को भूखों मार भूप जब सुखी महल में सोता है।''